राजसमन्द जिले में मार्बल इण्डस्ट्री

भारत वर्ष में कई तरह के स्टोन पाये जाते है, जैसे मार्बल, ग्रेनाईट, सेंड स्टोन, लाइम स्टोन, स्लेट पत्थर, क्वार्टज आदि। इनका उपयोग मुख्य रूप से भवन तथा सुन्दरता के लिए किया जाता है। जबकि आजकल इनका उपयोग फर्नीचर आदि में भी किया जाता है, जैसे मार्बल स्टोन तथा सेंड स्टोन है। राजस्थान में सेंडस्टोन के आर्टीकल के सजावटी सामान करौली जिले के हिन्डोन तथा दौसा जिले के सिकराय क्षेत्र में मुख्य निमार्ण केन्द्र है। इसी प्रकार मार्बल भी कई रंग में पाया जाता है, जैसे–गुलाबी, सफेद, हरा, पीला आदि प्रमुख है।

मार्बल मुख्य रूप से राजस्थान के नागौर, उदयपुर, बांसवाडा, डूंगरपुर, सिरोही, भीलवाडा, अलवर एवं राजसमन्द जिले में पाया जाता है। राजसमन्द में मुख्य रूप से सफेद मार्बल पाया जाता है,जिसका जिलोजीकल नाम डोलोमाईट है। जिले में इसकी मुख्य खाने धोलीखान, निझरना, मोरवड, घर्मेटा, उमठी, उमराया, झांझर, आरना, थोरिया, केलवा, तलाई, आगरिया, सरदारगढ, कोटडी, सपराव का गढ आदि है। इनमें लगभग 387 मिलीयन टन का भंडार है। खान एवं भू विज्ञान विभाग द्वारा वर्ष 2007–08 में 1250 खाने कार्यरत बतायी गयी है, जिनमें 367 लाख मे0टन खनन किया गया, जिससे 72 करोड रूपये की रायल्टी खान विभाग को प्राप्त हुई।

मार्बल खनन कार्य सर्वप्रथम जिले के आमेट तहसील में वर्ष 1971–72 में मिनरल ओरियन्टल लि0 (बिरला) ने आरम्भ किया था। अब खानो से मार्बल ब्लाक्स, लम्स, खण्डे आदि का खनन किया जा रहा है। वर्तमान में खनन कार्य में 1000 करोड रूपये का विनियोजन है,जिसमें 360 करोड रूपये के मार्बल का उत्पादन प्रतिवर्ष किया जा रहा है। प्रत्यक्ष रूप सें खनन कार्य में 12500 व्यक्तियों को रोजगार तथा अप्रत्यक्ष रूप से 6000 इस प्रकार कुल 18500 व्यक्तियों को मार्बल खनन कार्य से रोजगार प्राप्त है। इस प्रकार राजसमन्द जिले की मुख्य आजीविका का साधन मार्बल स्टोन ही है।

राजसमन्द जिले में औद्योगिकरण में उपयोग एशियाड 1982 के बाद प्रारम्भ हुआ। इससे पूर्व परम्परागत तरीके की दो इकाई कार्यरत थी, जिसमें मिटटी (रेत) तथा पानी से चिराई की जाती थी। वर्तमान मेकेनाईजेशन तरीके से 1982 में मार्बल उद्योग का प्रारम्भ किया गया। इसमें मार्बल गैंगसा मशीन तथा टूल्स आयातीत करके एसोसिएटेड स्टोन कोटा लि0, सरसवती मार्बल एण्ड ग्रेनाईट प्रा0लि0, फेन्सी स्टोन्स इन्डिया प्रा0लि0 आदि इकाईया स्थापित हुई।

मार्बल स्टोन का उपयोग भवन निमार्ण में फलोरिंग एवं टाइलिंग एवं फिलर के रूप में किया जाता है तथा इससे मार्बल आर्टीकल्स, सजावटी आइटम तथा फर्नीचर आदि का भी निमार्ण किया जा रहा है। मार्बल लम्स का उपयोग चिप्स निमार्ण में किया जा रहा है। इसकी क्रेजी का पावडर बनाकर डोलोमाईट पावडर के रूप में सफेद सीमेट, सिरेमिक टाइल्स, डिटरजेन्ट आदि में उपयोग किया जा रहा है। मार्बल स्लरी की उपयोगिता के बारे में भी धीरे–धीरे उपयोग किए जा रहे है। इसका प्रस्तावित उत्पादन भवन ब्रिक्स, ब्लाक्स व सीमेन्ट के स्थान पर उपयोग होना है। सेवानिवृत सहायक अभियन्ता, श्री सुराणा ने स्लरी बाइडंर निमार्ण हेतु मार्बल स्लरी डम्पिंग याडर्स पसून्द में एक बीघा भूमि आवंटन हेतु आवेदन किया हुआ है, जहां वह उक्त उद्योग स्थापित करना चाहते है।

जिले में नाथद्वारा से केलवा तथा केलवा चौराहा से आमेट रोड एवं आगरिया तक मुख्य रूप से औद्योगिक इकाईयां स्थापित है। मोही, थोरिया, तासोल रोड , सरदारगढ आदि स्थानों पर 235 मार्बल गैंगसा एवं 800 मार्बल कटर इकाईयां स्थापित है। गैंगसा इकाईयो में 300 करोड का विनियोजन तथा मार्बल कटर इकाईयों में 36 करोड रूपये का विनियोजन किया हुआ है। लगभग 1500 मार्बल गोदाम स्थापित है, जिनके द्वारा मार्बल का खुदरा विक्रय किया जाता है। इनमें 15000 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष तथा 10000 को अप्रत्यक्ष रूप से इस प्रकार कुल 25000 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध है। इस प्रकार मार्बल स्टोन में खनन तथा औद्योगिक इकाईयों में लगभग 43000 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिला हुआ है। इसलिए यह जिले का मुख्य व्यवसाय है।

गैंगसा इकाई

जिले में 235 मार्बल गैंगसा इकाईयां स्थापित है। मार्बल गैंगसा उद्योग में एक गैंगसा, एक गेन्ट्री क्रेन, एक ब्लाक ड्रेसर, शिफिटंग ट्राली, एज कटिंग मशीन स्थापित की जाती है, जिनमें 01 से 1.25 करोड रूपये का विनियोजन किया गया है। मार्बल गैंगसा इकाई में 10.50 फिट लम्बाई तथा 5.5 फिट चौडाई तक के पत्थर की चिराई की जाती है। एक मार्बल गैंगसा मशीन में 140 तक ब्लेड का उपयोग किया जा सकता है, जिसमें एक ब्लेड में 31 सिग्मेंट होते है। एक गैंगसा उद्योग में लगभग 15 व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध है तथा 15000क्यूबिक फिट मार्बल स्लेब्स का उत्पादन प्रतिमाह किया जा रहा है। इस उद्योग में 150 से 180 हार्सपावर तक पावर कनेक्शन की आवश्यकता होती है।

मार्बल कटर इकाई

जिले में 800 मार्बल कटर इकाईयां स्थापित है, जिसमें लगभग 36 करोड रूपये का विनियोजन है। मार्बल कटर में मुख्य रूप से ब्लाक कटर तथा एजकटिंग, जिप टाइप क्रेन मशीनरी स्थापित की जाती है। इसमें लगभग 07 व्यक्तियों को सीधे रोजगार उपलब्ध होता है। कटर इकाई में मार्बल वेस्ट तथा लम्स कटिंग का कार्य होता है,जिससे ढेड फिट तक चौडाई की टाइल्स का उत्पादन किया जा सकता हे। एक कटर इकाई से 10000 से 15000 वर्गफीट मार्बल टाइल्स का मासिक उत्पादन किया जा सकता है। इसमें 10 से 60 हार्सपावर तक विद्युत कनेक्शन की आवश्यकता होती है।

मार्बल आर्टीकल

जिले में मार्बल आर्टीकल्स की 60 इकाईयां स्थापित है, जिनमें लगभग 02 करोड रूपये का विनियोजन है। इसमें मुख्य रूप से लैथ 06 से 08 फिट, कटर मशीन, पोलिसिंग मशीन स्थापित की जाती है। सर्वप्रथम ब्लाक कटर में मार्बल लम्प्स को मार्बल क्यूबस (बोटा) बनाया जाता है। उसके उपरान्त उसको लैथ मशीन पर चढाकर विभिन्न आइटम जैसे– पिलर, फलावर पाट, आदि का रूप दिया जाता है तथा पोलिशर से पोलिस की जाती है। हाथ कटर तथा छिजल मशीनों द्वारा मूर्तियों का निमार्ण भी किया जा रहा है। इन इकाईयों में प्रति इकाई लगभग 05 व्यक्ति कार्यरत है। इन इकाईयों में लगभग 1.50 लाख रूपये के आर्टीकल्स का प्रतिमाह उत्पादन किया जाता है।

डोलोमाईट पावडर

डोलोमाइट पावडर की वर्तमान में लगभग 20 इकाईयां कार्यरत है। यह उत्पाद वर्ष 2005 से ही प्रारम्भ किया गया है। इसमें लगभग 25.00 लाख रूपये का विनियोजन होता है। मशीन के रूप में मुख्यत: थ्री रोलर एव बलौवर की स्थापना होती है,जिसमें 60–75 हार्सपावर विद्युत कनेक्शन की जरूरत होती है। एक इकाई में लगभग 3600 में0टन वार्षिक उत्पादन किया जाता है। इस प्रकार राजसमन्द जिले में मार्बल स्टोन एक आजीविका एवे आर्थिक सुधार में क्रांतिकारी सुधार लाया है।

इसी को देखते हुए राज्य सरकार ने एक मार्बल कलस्टर प्रस्तावित किया है। उक्त कलस्टर में भारत सरकार का 75 प्रतिशत, एसोसिएशन का 10 प्रतिशत तथा राज्य सरकार का 15 प्रतिशत हिस्सा है। राजसमन्द मार्बल गैंगसा एवं टाइल्स प्लान्टस एसोसिएशन द्वारा 5.00 करोड रूपये का प्रोजेक्ट तैयार कर प्रस्ताव राज्य सरकार को भिजवाये गये है। इस कलस्टर में तकनीकी उन्नयन, ग्रोथ सेन्टर,विपणन, पर्यावरण आदि पर विशेष ध्यान दिया जावेगा।